परंपरागत वास्तु और सीमायें

परंपरागत वास्तु दिशाओं पर आधारित विज्ञान है। परंपरागत वास्तु में उच्च कोटि के वैज्ञानिक तर्क शामिल हैं। वास्तु के सिद्धांत में जब यह कहा जाता है कि घर के उत्तर-पूर्व में कोई निर्माण नहीं किया जाना चाहिए तो इसका मतलब यह होता है कि प्रातःकाल में सूर्य की किरणें पूर्व दिशा से घर में प्रवेश करेंगी। प्रातःकालीन सूर्य की किरणें घर के निवासियों के स्वास्थ्य के लिए उत्तम होती हैं।

इसी तरह, अगर आप उत्तर की दिशा में सिर रखकर 5-6 घंटे सो लें तो चुंबकीय खिंचाव से आपके दिमाग पर दबाब पड़ता है। उत्तरी ध्रुव का खिंचाव मनुष्य के शरीर के रक्त प्रवाह को दिमाग की तरफ आकृष्ट करता है। ऐसे में अगर आपकी नसें कमजोर हों तो दिमाग की नसें फट सकती हैं और पैरालाइसिस (पक्षाघात) भी हो सकता है। इन्हीं कारणों से वास्तु के हर सिद्धांत के पीछे वैज्ञानिक कारण हैं। इन कारणों को हम कितनी अच्छी तरह से समझ सकते हैं, वह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस प्रकार के वास्तु विशेषज्ञ से बात कर रहे हैं।

परंपरागत वास्तु से हम सैकड़ों सालों से काम चला रहे हैं और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। लेकिन आज जहां हम रह रहे हैं, वहां के लैंडस्केप में ढेरों परिवर्तन हो चुके है। आज बहुमंजिली इमारतें बन रही हैं। ऐसे में हो सकता है कि आपके घर के उत्तर-पूर्व में कोई बहुमंजिली इमारत हो और प्रातःकाल के सूर्य की किरणें आपके घर में प्रवेश न कर रही हों या आपके घर के उत्तर-पूर्व में बिजली का बड़ा सा सब-स्टेशन

हो जो बड़ी मात्रा में नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न कर रहा हो और यह ऊर्जा आपके घर में प्रवेश कर रही हो। हमारे भवन के आसपास ऐसी चीजों के बन जाने से हम बढ़िया वास्तु डिजाइन वाले घर का भी पूरी तरह लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि हमारे घर के आसपास किया बना है या क्या बनेगा, इस पर हमारा कोई नियंत्रण नही होता।

बड़े शहरों में भूमिगत रेलगाड़ियां (मेट्रो) चल रही हैं। इसके लिए हमारे घरों और सड़कों के नीचे सुरंगें बनायी जाती है। फ्लाई ओवर बनाने के लिएं ऊंचे-ऊंचे खंभे बनाये जाते हैं जो जमीन में भी काफी गहराई तक धंसे होते हैं। इस तरह के निर्माण कार्यों से उस भूमि में भूदोष पैदा हो जाता है, जिस पर हमारा अपना घर बना होता है या जिस पर हम निर्माण कार्य करने जा रहे है।

इसी कारण से ऐसे मामलों में परंपरागत वास्तु से कम लाभ हासिल हो पाता है, जबकि हमारे पूर्वजों को इससे पर्याप्त लाभ मिलता था। आज हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह हमारे पूर्वजों की दुनिया से अलग है। हमारे चारों तरफ हो रहे निर्माण से जो सीमायें पैदा हो रही हैं, उनमें हम सब प्रभावित हो रहे हैं ओर हमें इसका हल ढूंढ़ने की जरूरत है। उनके लिए तो यह स्थिति और बुरी है जिन्होंने अपने मकान का निर्माण परांपरागत वास्तुशास्त्र के अनुरूप नहीं किया हैं। उनकी परेशानियां दोगुनी हो जाती है। ऐसे ढेर सारे प्रोजेक्ट, मकान, फैक्ट्री आदि बने हैं जो वास्तु के सिद्धांतो के अनुरूप नहीं हैं। इनमें सुधार की आवश्यकता होती है। नयी परिस्थितियों में नयी चुनौतियों से निपटने के लिए हमें वास्तु को लेकर भी नयी सोच पैदा करने की जरूरत है।

वास्तु में नयी सोच का ध्यान भूदोष दूर करने, भवन की सकारात्मक ऊर्जा को बनाये रखने और घर में शांति एवं सद्भाव पैदा करने के लिए सही रंगों के चुनाव एवं इस्तेमाल पर है।

भूदोष और इसे पहचानने तथा खत्म करने को लेकर ढेरों काम हो रहे हैं। एनर्जी स्कैनिंग भी इन्हीं कामों में से एक है। इससे यह पता लगाया जाता है कि घर में सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा कितनी है। घर में सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने के लिए बहुत सारे उपाय हैं। घर की दीवारों पर हम जिस रंग का इस्तेमाल करते हैं, उससे भी सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। रंगों के सही चुनाव से धर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ायी जा सकती है।

लेखक इंजीनियर हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में उच्चाधिकारी रह चुके हैं। फिलहाल वे भूदोष वास्तु सलाहकार के रूप में हैदराबाद मे रह रहे हैं। उनसे www.karmicvastu.com या उनके मोबाइल नम्बर 099893-00733 पर संपर्क किया जा सकता है।